[redacted]

डॉ० सुधीर कुमार सिंह, प्राचार्य, सोहताज महिला कॉलेज
बाराचट्टी, ग्रामीण समाजशास्त्र, पत्र संख्या- IV
बी०ए० (H), खण्ड- III

<u>ग्रामीण विवाह का अर्थ:—</u>

मानव के यौन व्यवहारों को नियंत्रित करने के लिए प्रत्येक समाज में विवाह का कोई न कोई स्वरूप पाया जाता है। पशु समाज में यौन इच्छा की तृप्ति एक शारीरिक आवश्यकता है जबकि मानव समाज में अंशतः शारीरिक, अंशतः सामाजिक और अंशतः सांस्कृतिक आवश्यकता है। विवाह वह संस्था है जिसके द्वारा दो विषम लिंगियों को यौन जीवन व्यतीत करने, सन्तानोत्पत्ति करने और उनका भरण-पोषण करने की सामाजिक स्वीकृति प्राप्त होती है। ग्रामीण समाज में भी लैंगिक संबंधों को नियंत्रित करने के लिए विवाह संस्था पाई जाती है।

ग्रामीण समुदाय में हिन्दुओं की बहुलता के कारण वहां हिन्दू विवाह प्रथाओं की ही प्रधानता पाई जाती है। वहां हिन्दू आदर्शों का प्रभाव है साथ ही गांव में विवाह प्रत्येक स्त्री पुरुष के लिए अनिवार्य समझा जाता है।

ग्रामीण विवाह के भी वे ही उद्देश्य हैं जो हिन्दू विवाह के हैं। हिन्दू विवाह को एक धार्मिक संस्कार के रूप में स्वीकार किया गया है जिसका उद्देश्य धर्म, प्रजा,